घरेलू चिकित्सा

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक:

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा -३

फोन:(०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

पुनरावृत्ति सन् २००६ *मूल्य :- ५.०० रुपये*

हमारे देश की साधारण जनता अशिक्षित तथा गरीब है। शहरों से बहुत दूरी पर फैले हुए ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के लिए चिकित्सा का प्रश्न बड़ा ही टेड़ा प्रश्न है। स्वास्थ्य विज्ञान में उनकी निज की जानकारी प्राय: नहीं के बराबर होती है। वहाँ जो चिकित्सक पाए जाते हैं, उनका चिकित्सा क्रम भी बड़ा दोषपूर्ण होता है, ऐसी दशा में ऐसे अनेक रोगी जो साधारण चिकित्सा से ही अच्छे हो सकते हैं—साधन न मिलने के कारण अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं।

ऐसे लोगों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए ही यह पुस्तक लिखी गई है, इसमें गिने-चुने प्रसिद्ध रोगों पर कुछ सरलता से उपलब्ध हो सकने वाली सीधी-सादी औषधियाँ लिखी हैं, जो कम मूल्य की, बनाने में सुगम और हानि रहित हैं। विष, रस, भस्म तथा ऐसी चीजें, जिनके सेवन में कुछ असावधानी हो जाए, तो खतरा उत्पन्न हो जाए, इस पुस्तक में नहीं लिखी गई हैं। इस पुस्तक की सहायता से साधारण पढ़े-लिखे लोगों को और अल्पशिक्षित स्त्रियों को तो अपने निकटस्थ लोगों की बीमारियाँ दूर करने में बहुत हद तक सफलता प्राप्त हो सकती है।

रोगों के लक्षण, पथ्य, मात्रा, सेवन-विधि आदि बहुत सी बातें इस छोटी पुस्तिका में नहीं लिखी जा सकी हैं। इसके लिए अपनी स्वाभाविक बुद्धि से काम लेना चाहिए या किसी निकटवर्ती जानकार वैद्य से सलाह लेनी चाहिए। नुसखों में कोई एकाध चीज प्राप्त न हो, तो उसे छोड़ा भी जा सकता है।

हमारा विश्वास है कि जिन देहाती क्षेत्रों में प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान और साधन पहुँचने अभी कठिन हैं, उन क्षेत्रों में यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी।

—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

घरेलू चिकित्सा

मलेरिया

(१) तुलसी के पत्ते और काली मिर्च पीसकर चने के बराबर गोली बना लें। एक-एक गोली गर्म पानी के साथ सुबह-शाम लें।

(२) कुड़े की छाल, घीग्वार की जड़, काली मिर्च, चिरायता, पीपल, निबोली की गिरी, करंज की गिरी, गिलोय, अजमोद, चित्रक- इन्हें बराबर लेकर नीबू के रस में खरल करके मटर जैसी गोली बना लें। सुबह-शाम एक-एक गोली शहद के साथ खावें।

(३)पीपल का चूर्ण १॥ मासे, नौसादर आधा मासे लेकर एक तोले पुराने गुड़ में मिलाकर प्रात:काल खावें।

(४) पटोल पत्र, नागरमौथा, लाल चंदन, कुटकी, नीम की छाल, चिरायता, बंशलोचन, इलाइची, गिलोय, धनिये, सौंठ, तुलसी की जड़, अजवायन, काला जीरा, ये सब चीजें बराबर लेकर कूट-छान कर रख लें। इस चूर्ण में से १॥ माशा शहद के साथ सुबह-शाम लें।

(५) नीम के फल, फूल, कोंपल, छाल, जड़ बराबर लेकर इनका चूर्ण बना लें। इसमें से २ माशा लेकर नीम की छाल के काढ़े के साथ पीवें।

(६) कमलगट्टे की मिगी, खूबकला, नीलोफर, लाल चंदन गिलोय और भांग बराबर लेकर अदरक के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बना लें। एक-एक गोली सुबह-शाम शहद के साथ लें।

(७) पाढ़ की जड़, खुरासानी अजवायन, काला जीरा, लोंग, पीपल, चित्रक, मुलहठी—इन्हें बराबर लेकर पीस लें और मूँग की बराबर गोली बना लें। दो-दो गोली सुबह-शाम शहद के साथ लें।

(८) धतूरे के बीजों को किसी मिट्टी के बरतन में भरकर उसका मुँह अच्छी तरह बन्द कर दें। इसे एक प्रहर कंडों की आग में लगा रहने दें। पीछे ठंढा हो जाने पर खोलें और पीसकर रख लें। इसमें से ६ रत्ती शहद के साथ दें।

(९) काली मिर्च ७, करंज की गिरी १ माशा, रसौत १ माशा, फिटकरी का फूला ४ रत्ती-इन सबको दो तोले पानी में पीसकर छान लें। थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर पीवें।

(१०) करेले की जड़ १॥ माशा, जीरा १ माशा, काली मिर्च ७, पुराना गुड़ ६ माशा मिलाकर सेवन करें।

(११) गो मूत्र में थोड़ा सेंधा नमक डालकर पैर के तलवों में मालिश करें।

विषम ज्वर

(जो ज्वर कभी सरदी से, कभी गरमी से, कभी कम, कभी ज्यादा तथा समय-बेसमय अनियमित रूप से आते हैं, उन्हें विषम ज्वर कहते हैं।)

(१) हर्र, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, इंद्र जौ, चिरायता, गिलोय, लाल चंदन, पटोल पत्र, पाढ़, कुटकी, सोंठ—इन औषधियों को बराबर लेकर जौ कुट करके रख लें। इनमें से १ तोला लेकर पावभर पानी में मंद-मंद आग पर पकावें जब एक छटांक रह जावे, तो छानकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पीवें।

(२) सोंठ, काला जीरा, वायबिडंग, नीम की गुठली का गूदा-इन्हें बराबर लेकर तुलसी के रस में खरल करें और उड़द के बराबर गोली बना लें, दो गोली गरम पानी के साथ सुबह-शाम लें।

(३) चिरायता, हर्र, पीपल, नेत्रवाला, त्रायमाण, कुटकी, सोंठ, गिलोय—इन्हें बराबर लेकर जौकुट करके उसमें से दो तोले दवा साढ़े पाँच तोले पानी में एक दिन एक रात मिट्टी के बरतन में भीगने

दें। दूसरे दिन इसे मसलकर छान लें और थोड़ा शहद मिलाकर पीवें।

(४) चौलाई की जड़ का रस ३ माशा, शहद ३ माशा मिलाकर चाटें।

(५) देवदारु, जवासा, कचूर, पीपल, कटेरी की जड़ का चूर्ण ३ माशा, पुराना गुड़ ३ माशा मिलाकर खावें।

(६) नीम की छाल, धनियाँ, सनाय, अमलताश का गूदा, बड़ी हर्र का छिलका, गिलोय, चिरायता, सोंठ, इनमें से हर एक तीन-तीन मासे लेकर आधे सेर पानी में पकावें, जब आध पाव रह जावे तो छानकर मिश्री मिलाकर पीवें। इससे एक तो दस्त साफ हो जाते हैं और ज्वर चला जाता है।

(७) दाख ७ दाने, सोंठ १ ॥ माशा, पीपल १ ॥ माशा, गिलोय १ ॥ माशा, जावित्री १ ॥ माशा-ये सब चीजें जौकुट कर लें। फिर पावभर गौ या बकरी के दूध में पावभर पानी डालकर— इन दवाओं के साथ पकावें। जब पानी जल जाए तो दूध को उतारकर छान लें। इस दूध को पीने से विषम ज्वर ठीक हो जाता है।

(८) लोंग, निशोथ, अपामार्ग की जड़, अजवायन, अजमोद, कटेरी की जड़—इन्हें पीसकर बराबर गोली बना लें। ज्वर आने से २ घंटे पहले-पहले गोली पान में रखकर खावें।

संतत ज्वर
हर वक्त थोड़ा-बहुत बना रहने वाला बुखार

(१) कुटकी, त्रायमाण, सारिबा, नागरमोथा, चित्रक, जवासा— यह दो-दो तोले लेकर आधा सेर पानी में पकावें। जब आध पाव रह जाए तो छान कर छः माशा शहद मिलाकर पीएँ।

(२) सत गिलोय १ ॥ माशा शहद में मिलाकर चाटें ।

(३) अजवायन ६ माशा एक दिन-एक रात पानी में भिगोवें, दूसरें दिन उसे सिल पर आध पाव पानी के साथ पीसकर छान लें।

एक कुल्हड़ आग में खूब लाल करके उसमें इस पानी को डालें । डालते समय जो भाप निकलती है, उसे मुँह और छाती पर लें और दवा को छानकर जरा-सा काला नमक मिलाकर पीवें ।

जाड़े का बुखार

तिजारी व चौथैया

(एक दिन बीच में देकर व दो दिन बीच में देकर आने वाले ज्वर)

(१) अडूसा, पटोलपत्र, तेजपात, अमलताश, दारुहल्दी, बच, राई, पीपल—इनको दो तोले लेकर क्वाथ बनाकर पीवें।

(२) लाल चंदन, खस, हरड़, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, आँवला, देवदारु, दारुहल्दी—इन्हें दो तोले लेकर क्वाथ बनाकर पीवें।

(३) एक वर्ष पुराने घी में हींग मिलाकर सूँघें।

(४) ओंगा की पत्ती २ माशा पीसकर पुराने गुड़ के साथ मिलाकर खावें।

(५) नौसादर और काली मिर्च बराबर लेकर पीस लें। इसमें से एक माशा लेकर शहद के साथ चाटें।

(६) करंजे की मिगी को नीबू के रस में खरल करें और चने के बराबर गोलियाँ बना लें, गर्म पानी के साथ यह गोली सुबह-शाम लें।

(७) अतीस की जड़ १ तोला, पोस्त खसखस ३ माशा, कासनी के बीज ६ माशा, उन्नाब १ तोला, बहेड़ा १ तोला, करंजे की गिरी १ तोला, फिटकरी भुनी १ ॥ माशा—इन दवाओं को कूट-छानकर चूर्ण बना लें। १ ॥—१ ॥ माशा सुबह-शाम शहद के साथ लें।

पुराने बुखारों पर

(१) पीपल का चूर्ण १ ॥ माशा, गिलोय के रस और शहद में मिलाकर सेवन करें।

(२) नागरमोथा, चिरायता, पितपापड़ा, गिलोय, कुटकी, सोंठ, तालीस पत्र; कचूर, कायफल, काकड़ासिंगी, कूट, पोहकरमूल बराबर

लेकर कुचल लें। दो तोले दवा आध सेर पानी में पकावें, चौथाई रह जाने पर छानकर पीवें।

(३) खिरैटी, मुलहठी, सारिबा, पद्माख, धमासा, धनियाँ, खस, कमलगट्टा, सुगंध वाला, पोहकरमूल, कूचर, चिरायता, पीपल—इनका चूर्ण १॥ मासे नित्य शहद के साथ सेवन करें।

(४) रास्ना, कटेरी की जड़, जीरा, कुटकी, बंशलोचन, देवदारू, अनंतमूल, सोंठ—इन्हें अदरख के रस और तुलसी के रस में खरल करें फिर उड़द के बराबर गोली बना लें। एक-एक गोली दो-दो घंटे बाद शहद के साथ लें।

(५) बड़ की कोंपल, अजमोद, हरड,चित्रक, हंसराज, हल्दी,जबाखार, बहेडे की गुठली, निशोथ, पटोलपत्र, वनतुलसी की जड़, सोंठ, सेंधा नमक—इन्हें नीम की छाल के क्वाथ में खरल करके चने जैसी गोलियां बना लें, अदरख के रस और पान के रस के साथ एक-एक गोली सुबह-शाम लें।

लू लगने का बुखार

(१)-कासनी,धनियाँ,बनफसा,मकोय,मुलहठी,सोंफ,काली मिर्च, दाख बराबर लेकर कूट-छान लें। इसमें से २ तोला लेकर एक पाव पानी में पकावें जब आधा रह जावे तो छानकर ठंढा कर और मिश्री मिलाकर पीवें।

(२) धनियाँ ३ माशे काहू के बीज ३ माशे छटांक भर पानी में पीसकर छान लें, इसमें ४ तोले अर्क गुलाब, २ तोला शरबत चंदन मिलाकर पिलावें।

(३) आँवले का मुरब्बा चाँदी का बर्क लपेटकर खिलावें।

(४) छोटी इलाइची, धनियाँ, चंदन, खस, पोस्त के बीज, गुलाब के फूल इन्हें मिला १॥ तोला लें। छह छटाँक पानी में औटावें जब आध पाव रह जावे तो मिश्री मिलाकर पीवें।

(५) कद्दू के बीज ६ माशे मिश्री की चासनी के साथ खिलावें।

(६) शतावर,ढाक का गोंद, धाय के फूल—तीनों को गुलाब

के फूलों के रस में घोंटकर गोली बना लें । एक गोली पान के साथ दें।

तिल्ली बढ़ने पर

(१) बड़ी हरड, सेंधा नमक और पीपल का चूर्ण पुराने गुड़ के साथ खावें ।

(२) आक के पीले पत्ते, सेंहुड,सहजना की छाल,पाँचों नमक पाव भर, पीपल, सोंठ, अजवाइन,नौसादर, चित्रक, लोंग, कूठ एक-एक तोला इन्हें मिट्टी के बरतन में बंद करके भली प्रकार कपड मिट्टी कर दें और एक प्रहर तक कंडों की आग में लगा रहने दें । ठंढा हो जाने पर भस्म को पीस लें। १ माशा गरम पानी के साथ लें ।

(३) सरफोंका की जड़ और चीते की जड़ का चूर्ण २ माशा, नमक, जीरा मिले हुए मटठे के साथ सेवन करें ।

(४) राई, जवाखार,भुनी हुई हींग, सोंठ, जीरा, कूठ, पीपल, चीता, सेमल के फूल, चव्य, पीपरामूल, हरड इन्हें पीसकर बिजौरा नीबू के रस में खरल करें और मटर के बराबर गोली बना लें । एक गोली नित्य गरम पानी के साथ लें ।

(५) मूली का खार, बेंगन का खार, जवाखार, सज्जीखार और नौसादर—इन्हें पीसकर रख लें । इसमें से १ माशा मूली के रस या नीबू के रस के साथ सेवन करें ।

(६) हरड, बहेड़ा,आँवला, सोंठ,काली मिर्च,पीपल,सहजन की छाल, दारुहल्दी, कुटकी,गिलोय, पुनर्नवा—इनका क्वाथ बनाकर पीवें।

(७) दो अंजीर जामुन के सिरके में डुबाकर प्रात:काल नित्य खावें ।

(८) आधा माशा नौसादर गरम पानी के साथ सवेरे लें ।

जिगर बढ़ने पर

(१) राई को गौ मूत्र में पीसकर पेट पर लेप करें ।

(२) हल्दी, दारुहल्दी,. पीपल,मूली का खार—इनका चूर्ण ३ माशे ग्वारपाठा के गूदे के साथ खावें ।

(३) मूली का रस २ तोला जरा-सा जवाखार डालकर पीवें ।

(४) पीपल, वायबिडंग, नागकेशर, सोंठ, गिलोय—इनको मिट्टी के कुल्हड़ में बंद करके आग में लगा दें । भस्म हो जाने पर निकाल लें । इसमें से १ माशा गाय के मटठे के साथ खावें ।

(५) अलसी और अंडी के बीज पीसकर जिगर पर लेप करें ।

(६) नागरमोथा, आँवला, हरड़, पीपल, गूमा की जड़,पीपरामूल, नाम की छाल, पटोल पत्र, पुनर्नवा, करेले की जड़—इनका चूर्ण ३ माशा शहद के साथ खावें ।

(७) करेले के बीजों की गिरी मकोय के पत्तों के रस में घोंटकर चने के बराबर गोली बना लें, गरम पानी के साथ इन गोलियों का सेवन करें ।

(८) बथुआ की जड़ और काली मिर्च-इन्हें पीसकर जंगली बेर के बराबर गोली बना लें । १ गोली शहद के साथ नित्य खावें ।

(९) गौ मूत्र गुनगुना करके उसमें कपडा भिगोकर जिगर के स्थान पर पेट को सेकें ।

(१०) नीम की छाल का क्वाथ शहद मिलाकर पीवें ।

चेचक

(१) हल्दी का चूर्ण व नीम की गिरी तुलसी के रस में घोंट लें इसकी मटर बराबर गोली बना लें । जब चेचक फैलने की संभावना हो, तो इन गोलियों में से एक गोली पानी के साथ प्रातःकाल देना चाहिए । इससे चेचक नहीं निकलती ।

(२) कलौंजी का चूर्ण शहद में मिलाकर चटावें ।

(३) गाय का घी काँसे की थाली में डालकर ठंढे जल से सौ बार धोकर उसमें कपूर मिलाकर फुन्सियों पर लगाने से जलन शांत होती है ।

(४) तुलसी के पत्ते, जावित्री, जायफल, इलाइची एक-एक

तोला, केशर ३ माशे, बंशलोचन ६ माशे, मोती छोटे एक माशा—इन सबको गंगाजल में पीसकर मोंठ की बराबर गोली नित्य दें ।

(५) बिनौले, लाख, मसूर, अतीस, बच, तुलसी, बाँस की लकड़ी, इनका धुआँ चेचक की फुन्सियों पर लगावें ।

(६) अडूसे का रस और शहद मिलाकर चटावें ।

(७) धमासा, खस, आँवला, रास्ना, धनियाँ, खिरैटी, खैर, सफेद चंदन , लाल चंदन, दाख—इन सबको पीसकर मूँग बराबर गोली बना लें । ताजे पानी के साथ एक गोली सेवन करें ।

(८) पटोल की जड़, श्योनाक, चौलाई की जड़, हल्दी,अडूसा, इन्द्र जौ, पटोलपत्र, नीम की छाल—इन्हें करेले के पत्तों के रस में घोंटकर गोली बना लें । यह गोली शहद के साथ दें ।

(९) जंगली कंडों की राख छानकर छिरछिरे कपड़े की पोटली बनाकर रख लो । फुंसियों पर इसे झाड़कर लगा देने से फुन्सियाँ जल्दी अच्छी हो जाती हैं ।

(१०) बेर की गुठली की गिरी एक मासे पुराने गुड़ के साथ खावें।

खाँसी

(१) काकड़ा सिंगी और मुलहठी बराबर-बराबर पीसकर रख लें। इस चूर्ण को एक मासे शहद में लेकर चाटें, दिन में कई बार चाटना चाहिए ।

(२) अदरक का रस पान का रस, शहद—तीनों को तीन-तीन मासे मिलाकर चाटें ।

(३) अडूसे का क्षार चार रत्ती लेकर थोड़े शहद में लेकर चाटें।

(४) सोंठ, काली मिर्च, पीपल—इन्हें बराबर लेकर चूर्ण बना लें। एक-एक माशा लेकर शहद के साथ सेवन करें।

(५) हल्दी को भूभल में खूब भून लें, फिर उसके छोटे-छोटे टुकड़े लेकर सुपाड़ी की तरह मुँह में पड़े रहने दें, धीरे-धीरे गले में जाने दें।

(६) काकड़ा सिंगी, बबूल का गोंद, खसखस का पोस्त, छोटी पीपल, सोंठ, काली मिर्च, छोटी—इलाइची सबको बराबर पीसकर पुराने गुड़ के साथ मटर के बराबर गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को सुपाड़ी की तरह मुँह में डालकर चूसना चाहिए।

(७) अड़ूसा, कटेरी, सोंठ, पोहकर मूल, कुलथी, भारंगी, काकड़ासिंगी, पीपर, कचूर, बहेड़े की छाल, चव्य—इन सब चीजों को घीग्वार के रस में खरल करके जंगली बोर के बराबर गोली बना लें। सुबह-शाम एक-एक गोली गरम पानी के साथ लें।

(८) पपरिया कत्था, उन्नाब, मुलहठी, काली मिर्च, लोंग, बबूल का गोंद, अनार का छिलका, छोटी इलायची, कुलंजन, अकरकरा, जायफल-यह सब बराबर लेकर अड़ूसे के पत्तों के रस में खरल करके जंगली बेर के बराबर गोली बना लें, इन्हें मुख में डालकर धीरे-धीरे चुसें।

(९) सत उन्नाव और सत मुलहठी बराबर-बराबर लेकर मुँह में डाल लें और उनका रस धीरे-धीरे गले में जाने दें।

(१०) बबूल का गोंद, कतीरा, बादाम की मिगी, बंशलोचन, इनको बराबर पीसकर शहद में मिलाकर चटनी-सी बना लें। थोड़ी-थोड़ी चाटते रहें।

(११) ढाक के पत्ते, अड़ूसे के पत्ते, अंजीर के पत्ते, केले के पत्ते, लिसोढे के पत्ते,बराबर लेकर एक मिट्टी की हाँड़ी में रखरकर अच्छी तरह मुँह बन्द कर दें, उस हाँडी को कंडों की आग में एक प्रहर लगा रहने दें। पीछे हाँडी बिलकुल ठंढी हो जाने पर दूसरे दिन उन जले पत्तों को निकालें। मिश्री की चासनी के साथ एक माशा इस भस्म को चाटना चाहिए।

(१२) दालचीनी का चूर्ण अंजीर के शरबत के साथ चाटें।

(१३) ढाई सेर पानी में दो छटांक मुल्तानी मिट्‌टी घोल दें। जब मिट्‌टी नीचे बैठ जाय तो उस पानी को नितारकर पीवें।

(१४) बबूल का बक्कल और मिश्री चूसने से खाँसी अच्छी होती है।

सर्दी-जुकाम

(१) दही में सफेद बूरा मिलाकर प्रातःकाल पीना चाहिए।

(२) अदरक का रस और शहद छह-छह माशा लेकर चाटना चाहिए।

(३) कालीमिर्च, सोंठ, छोटी पीपल को बराबर कूट-पीसकर उससे चौगुना गुड़ मिलाकर बड़ी मटर के बराबर गोलियाँ बना लें, इन गोलियों को गरम पानी के साथ सेवन करें।

(४) अनार के फल का रस, दूब का रस और गुलाब जल मिलाकर उससे नाक को तर रखने से जुकाम अच्छा हो जाता है।

(५) उबलते हुए गरम उड़द को नमक मिलाकर भोजन के बाद खावें।

(6) दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, बच, वायबिडंग, हींग और काला जीरा बराबर लेकर महीन पीस लें। उस चूर्ण को कपड़े की पोटली में बाँधकर बार-बार सूँघें।

(७) नौसादर और चूना बराबर लेकर पीसकर शीशी में भर लें, और मजबूत कार्क लगा लें। इसे चार बार सूघें।

(८) गेहूँ की भूसी एक तोले, गुलबनफसा एक तोले, काली मिर्च दस मासे—इनको ६ छटांक पानी में पकावें जब ३ छटांक रह जावे, तो छानकर थोड़ी मिश्री मिलाकर गरम-गरम पी लें और कपड़ा ढककर लेटे रहें। इससे पसीना आता है और जुकाम अच्छा हो जाता है।

(९) सोंठ और पोस्त एक-एक तोले लेकर आधा सेर पानी में पकावें, चौथाई रह जाने पर छान लें, थोड़ा शहद मिलाकर पींवे।

(१०) शक्कर का धुआँ सूँघने से जुकाम जाता है।

(११) गेरू, बेहड़े की गुठली का गूदा, कपूर, पान का रस और बबूल का गोंद बराबर लेकर महीन पीस लें। इसे कपड़े के दो छोटे टुकड़ों पर लेप करके कनपटियों पर चिपका देना चाहिए।

(१२) कद्दू के बीज, पोस्त, अजबायन, कत्था और जावित्री बराबर लेकर अदरक के रस में घोंट लें, इनकी उड़द के बराबर गोली बना लें। ये गोलियाँ चूसें।

(१३) हल्दी ६ माशे, काली मिर्च १॥ माशा तथा थोड़ा-सा काला नमक आधा सेर पानी में औटावें जब आधा रह जाए तो छानकर गरम-गरम पीवें।

(१४) गरम-गरम भुने चने सूँघें और चबाएँ।

(१५) गुलबनफसा ४ मासे, उन्नाव नग ७, सौंफ ४ माशे, सनाय ६ माशा, मुनक्का नग ७, अंजीर नग ३—इन सबको डेढ़ पाव पानी में पकावें। जब आधा पाव रह जावे, तो छानकर तोले भर मिश्री मिलाकर पीवें। इससे पेट भी साफ हो जाता है, और जुकाम भी चला जाता है।

श्वांस

(१) गरम पानी में मोटा कपड़ा भिगो कर उससे छाती को सेंक करने से दमे का दौरा रुकता है।

(२) एक चौड़े-गहरे बरतन में गरम पानी भरकर उसमें रोगी के पैर रखकर आध घंटे बैठावें, इससे भी दौरा रुकता है।

(३) गरम पानी पीने से श्वास की अधिकता रुकती है।

(४) अजबायन, सुहागा, लोंग, सेंधा नमक, काला नमक, सांभर नमक—इनको बराबर लेकर एक मिट्टी की हाँड़ी में रखकर उसका अच्छी तरह मुँह बंद कर दे फिर उसे कंडो की आग में एक प्रहर तक जलावें, बाद में ठंढा होने पर हाँड़ी का मुँह खोलकर भस्म को पीसकर रख लें। इसमें से दो-दो रत्ती दवा शहद के साथ सेवन करें।

(५) एक तोले सोंठ का चूर्ण छह छटांक पानी में पकावें जब पानी आध पाव रह जाए तो उसे छानकर पीवें।

(६) कचूर, नागरमोथा, सोंठ, छोटी पीपल, काकड़ासिंगी, काली मिर्च—इनको समान भाग कूटकर रख लें, इस चूर्ण को २ माशा लेकर गिलोय और अडूसे के रस के साथ सेवन करें।

(७) काकड़ासिंगी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, हरड़, बहेड़ा, आँवला, कटेरी का पंचांग, नारंगी, कूठ, जटामासी, पाँचों नमक—सबको समान-समान भाग पीसकर रख लें। इस चूर्ण को दो-दो मासे सुबह-शाम गरम जल के साथ लेना चाहिए।

(८) धाय के फूल, पोस्त के डोंड़े, बबूल का बक्कल, कटेरी, अडूसा, छोटी पीपल, सोंठ—इन सबको ३-३ माशा लेकर आध सेर पानी में पकावें, जब आध पाव रह जाए, तो छानकर छह माशा शहद मिलाकर पीवें।

(९) सफेद दखनी-गोल मिर्चों को भूनकर उसमें बराबर मिश्री मिला लें, इसमें से एक-एक माशा दिन में कई बार सेवन करें।

(१०) सफेद जीरा ३ माशा, छोटी दुधी ४ माशा—इन दोनों को आधी छटांक पानी में पीसकर छान लें, जरा-सा सेंधा नमक डालकर प्रातःकाल पीवें।

(११) गेरु, रसौत, छोटी पीपल, कैथ, पौकरमूल, कचूर, मालकांगनी, छोटी इलाइची के बीज, भुनी हुई फिटकरी, वायबिडंग, हल्दी, भारंगी— इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बना लें। इनमें से दो-दो मासे सुबह-शाम शहद के साथ सेवन करें।

(१२) आक के पीले पत्ते और कँटेरी का पंचांग बराबर लेकर मिट्टी की हाँड़ी में बंद करके कंडों की आग में एक प्रहर तक जलावें, ठंडा होने पर इसमें से दो रत्ती लेकर शहद के साथ चाटें।

(१३) सेंधा नमक और गाय का घी मिलाकर छाती पर मलने से श्वांस रोग में लाभ पहुँचता है।

(१४) भुनी अलसी ४ तोले, भुनी काली मिर्च १ तोले पीसकर रख लें, इसमें से ३ मासे चूर्ण सुबह-शाम सेवन करें।

(१५) कूट, जवाखार, सोंठ, पीपल और हर्र का बक्कल—चारों एक-एक मासे लेकर पानी के साथ सिल पर पीस लें, इसे चाटकर ऊपर से दो घूँट गरम पानी पीवें।

हिचकी

(१) आम के सूखे पत्ते चिलम में रखकर उसका धुआँ पीने से हिचकी दूर हो जाती है।

(२) केले की जड़ के रस में थोड़ी मिश्री मिलाकर पीवें।

(३) घी और शहद में थोड़ा जवाखार मिलाकर चटावें।

(४) बिजौरे नीबू के रस में सेंधा नमक डालकर चाटें।

(५) बड़ी इलाइची पीसकर मिश्री की चासनी के साथ चाटें।

(६) सेर भर पानी में एक तोले राई महीन पीसकर मिला दें, जब राई नीचे बैठे जाए तो उस पानी को नितारकर पिलावें।

(७) मोरपंख के चँदवे की भस्म एक रत्ती शहद और मक्खन के साथ चाटें।

(८) आधा सेर बकरी के दूध में आध सेर पानी और एक तोला सोंठ मिलाकर आग पर पकावें जब आध सेर रह जाए तो छान कर थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन बार में पिलावें।

(९) रसौत और बेर की गुठली की गिरी पानी के साथ पत्थर पर घिसकर चाटें।

(१०) मूसली, भारंगी, नेत्रवाला, कचूर, पोहकरमूल, शिवलिंगी—इन्हें बराबर पीसकर सबको बराबर मिला लें, इस चूर्ण को थोड़ा-थोड़ा मुख में रखें।

(११) सोंठ, आँवला, देवदारु और पीपल का समान भाग चूर्ण दो माशा गरम पानी के साथ लें।

(१२) काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, समुद्र नमक—इन चारों को बराबर पीसकर मुँह में डालें।

(१३) साठी चावलों का भात घी के साथ खिलावें।

(१४) गौ के गरम दूध में गौ घृत डालकर पीवें।

(१५) हरा पोदीना १ तोला लेकर उसे एक पाव पानी में पीस लें, थोड़ी मिश्री मिलाकर छान लें, इसे शरबत की तरह पीवें।

(१६) नारियल की गिरी और मिश्री चबावें।

(१७) बबूल के हरे कांटे एक तोले लेकर डेढ़ पाव पानी में मंद-मंद अग्नि पर पकावें, जब आधा पाव रह जाए तो छानकर पीवें।

(१८) चने की दाल, अरहर की दाल और मसूर की दाल के छिलकों को चिलम में रखकर उसका धुँआ पीवें।

(१९) नारियल की जटा जलाकर उसे पानी में घोल दें, इस पानी को नितार कर पीवें।

(२०) रोगी का चित्त हिचकी पर से हटा देना चाहिए। अचानक डरा देने, हंसा देने, चौंका देने शोक या हर्ष पैदा कर देने, अनजान में मुँह पर पानी छिड़क देने आदि क्रियाओं से कुछ देर के लिए रोगी का चित्त हटकर एकदम बिलकुल दूसरी तरफ लग जाता है तो हिचकी बंद हो जाती है।

(२१) सूँघने से हिचकी बंद होती है।

(२२) ढाक के बीज, बेलगिरी, बच और कमल के बीज बराबर मात्रा में लेकर लहसुन के रस में खरल करके मूँग के बराबर गोली बना लें, इन गोलियों को मुँह में रखने से हिचकी बंद होती है।

गला बैठ जाना और गले का दरद

(१) अकरकरा, कुलंजन और मुलैठी के टुकड़े सुपाड़ी की तरह मुँह में रखने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

(२) चव्य, चित्रक, तालसी पत्र, सफेद जीरा, बंशलोचन, काली मिर्च, अमलबेत, सोंठ, तेजपात, इलाइची, दालचीनी—इन सबको बराबर लेकर कूट-छान लें। इस चूर्ण को २ माशा शहद के साथ चाटें।

(३) आँवले का चूर्ण गाय के धारोष्ण दूध के साथ पीवें।

(४) मूली के बीज, कवाव चीनी, कुंलजन, काली मिर्च, बड़ी इलाइची, मुलहठी—इन सबको बराबर लेकर कूट-छान लें और पानी के साथ गोली बना लें। इन गोलियों को मुख में रखकर चूसें।

(५) अगर, देवदारु, हल्दी, बच, मीठा कूट, काली मिर्च बराबर लेकर जौकुट करके दो तोला लें। उसे छह छटांक पानी में पकावें जब डेढ छटांक रह जावे तो मिश्री मिलाकर पीवें।

(६) गन्ना भूनकर चूसने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

(७) सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आँवला और जवाखार—इन सबका चूर्ण थोड़ा-थोड़ा मुँह में डालते रहें।

(८) अजबाइन और खसखस के पोस्त बराबर लेकर उसका काढ़ा बनावें। इस काढ़े से गरारे करने चाहिए।

(९) अदरख की गाँठ में छेद करके इसमें थोड़ा-सा नमक और भुनी हुई हींग भरकर आग में भून लें, इसे पीसकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें, इन्हें चूसें।

(१०) गोरखमुंडी की जड़ पान में रखकर खावें।

(११) बच, खुरासानी अजबाइन, मालकांगनी, बच, कुलंजन,हरड़ की गिरी, सेंधा नमक-इन सबको बराबर पीसकर चूर्ण बना लें। इसे सुबह-शाम शहद के साथ सेवन करें।

(१२) बड़ा गोखरू, खिरेंटी, सोंठ, रास्ना, छोटी पीपर, काली मिर्च-इन्हें १ तोला लेकर सिलपर पीसकर मिश्री के साथ चाटें।

(१३) पीपर, अडूसा, हरड़, बच, ब्राह्मी-इनका चूर्ण ३ माशा शहद और घी में मिलाकर चाटें।

(१४) अडूसे के पत्तों का काढ़ा शहद के साथ पीने से गला खुल जाता है।

(१५) अमलताश के गूदे का काढ़ा बनाकर उससे गरम-गरम कुल्ले करें।

(१६) मैदा, हल्दी अलसी का तेल और फिटकरी की पुल्टिस बनाकर गले पर बाँधे।

(१७) अनार की कली, सूखा धनियाँ, पोस्त के दाने, शहतूत के हरे पत्ते, मसूर की दाल छह-छह मासे लेकर एक सेर पानी में काढ़ा बनावें, उससे कुल्ला करने से गले की सूजन और दरद बंद हो जाता है।

प्रमेह

(१) हरी गिलोय का रस १ तोला, ३ माशा शहद में मिलाकर चाटें।

(२) शुद्ध शिलाजीत १ माशा लेकर दूध के साथ सेवन करें।

(३) जौ की रोटी खावें।

(४) बबूल की कोंपल, शीशम की कोपल, शंखपुष्पी—ये चारों चीजें मिलाकर २ तोला लें। पाव भर पानी में ठंढाई की तरह घोंटकर मिश्री मिलाकर पीवें।

(५) हल्दी, तालमखाना, मूसली, गोखरू बड़ा, शतावर—इन पाँचो चीजों का चूर्ण बना लें। ३ माशा चूर्ण को गाय के धारोष्ण दूध के साथ लेना चाहिए।

(६) सालभ मिश्री, शीतल चीनी, दालचीनी, कोंच के बीज, मूसली सफेद, मूसली स्याह, तवाखीर, छोटी इलाइची, खिरेंटी आँवला, बिदारीकंद, मुलहठी—इनका चूर्ण ३ मासे एक दूध के साथ लें।

(७) बड़ का दूध १० बूँद एक बतासे में रखकर प्रातःकाल खावें।

(८) गूलर के कच्चे फल छाया में सुखाकर पीस लें, बराबर मिश्री मिलाकर ताजे जल के साथ एक तोले लें।

(९) कतीरा, ढाक का गोंद, बबूल का गोंद, सेमल का गोंद, लालवंती के बीच, बंशलोचन, ईसबगोल की भूसी, चिकनी सुपाड़ी-इन्हें पीसकर चूर्ण बना लें।

स्वप्नदोष

(१) मुलहठी का चूर्ण १॥ मासे धारोष्ण गो दूध के साथ लें।

(२) पके केले मिश्री से लगा-लगाकर खावें।

(३) गिलोय, गुलाब के फूल, आँवला, धनियाँ, चंदन चूरा, इनकी ठंढाई बनाकर पीवें।

(४) इमली के बीज, बबूल के बीज, ढाक के बीज, कोंच के बीज, ३-३ माशा लेकर २४ घंटे पानी में भीगने दें, दूसरे दिन छिलके उतारकर सिल पर पीस लें और मिश्री मिलाकर चाटें।

(५) शतावर, तालमखाना, कोंच के बीज, गिलोय का सत, सफेदमूसली, गोखरू, चोप चीनी बराबर लेकर चूर्ण बना लें। २ माशा चूर्ण शीतल जल के साथ सुबह-शाम लें।

(६) शीतल चीनी और मिश्री बराबर मात्रा में पीसकर रख लें। इसमें से ६ मासे लेकर गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करें।

(७) बबूल का बक्कल, गोंद, फूल, फली, पत्ते—सबको सुखाकर बराबर मात्रा में पीस लें। इसमें से ६ मासे लेकर दूध के साथ सेवन करें।

(८) इलाइची, बंशलोचन, गिलोय का सत, मुलहठी, हल्दी- इनका चूर्ण २ मासे मलाई के साथ दोनों वक्त खावें।

(९) हरड़ २ माशा, बहेड़ा ४ माशा, आँवला ६ माशा जौकुट करके १॥ पानी में भिगो दें। दूसरे दिन खूब मथकर छान लें। मिश्री मिलाकर प्रात:काल पीवें।

(१०) सौंफ, रेवंदचीनी, वनफसा के फूल, गुलाब के फूल, सफेद चंदन—इनकी ठंढाई बनाकर पीवें।

(११) इंद्र जौ, सौंफ, कंकोल, सफेद चंदन, खस, असगंध, बिधारा, जायफल, निशोथ, उटंगन के बीज, सूखे सिंघाड़े, बहमन, तोदरी, बच, दारुहल्दी, धनियाँ, अकरकरा—इनका चूर्ण ३ माशा मिश्री मिलाकर दूध के साथ सेवन करें।

शीघ्र पतन

(१) सफेद कंद १तोला, रिहाँ के बीज १ तोला, अकरकरा ३ मासे पीसकर रात को शीतल जल के साथ फाँक लें।

(२) ईसबगोल की भूसी, काहू के बीज, कासनी के बीज,

धनियाँ, नीलोफर के फूल, भाँग के बीज, बंशलोचन, अनार के फूल, गुलाब के फूल—इनका चूर्ण रात को शीतल जल के साथ फाँक लें।

(३) समुंदर शोष, गैंदा के बीज, ढाक के बीज, काले तिल, सेमल का मूसला, सिरस के बीज-इनका चूर्ण ३-३ माशा सुबह-शाम सेवन करें।

(४) उड़द का आटा घी में भून लें, मिश्री के साथ हलुआ बनाकर लें। इसे प्रात:काल उतना खाया करें, जितना आसानी से पच जाए।

(५) छुहारे की खीर बनाकर खावें।

(६) कुलंजन, सेमर की जड़, कोंच के बीज, अकरकरा, असगंध, पीपल का गोंद, जावित्री, गिलोय का सत, बंशलोचन-इनका चीर्ण गौ दूध के साथ सुबह-शाम लें।

बहुमूत्र

(१) जवाखार और मिश्री ३-३ माशा ताजे जल के साथ खावें।

(२) राई, काले तिल, कलमी शोरा, टेसू के फूल, दालचीनी-इनका चूर्ण २ माशा शहद के साथ खावें।

(३) बबूल का गोंद घी में भूनकर रख लें। इसे प्रात:-सायं मक्खन के साथ खावें।

(४) बबूल के फूल, बबूल के फली, छाल, पत्ती तथा गोंद—इनका क्वाथ बनाकर पीवें।

(५) चूहे की मेंगनी, कलमी शोरा, खीरा या कद्दू के बीज में पीसकर पेडू पर लेप करें।

(६) आँवले कुचलकर १० गुने पानी में दो रोज तक भीगने दें, बाद में उसे छान लें। इस पानी में कपड़ा भिगोकर पेडू पर रखा करें।

प्रदर

(१) पके हुए केले खाकर ऊपर से दूध पीवें।

(२) कमलगट्टे की गिरी, सफेदचंदन, खस, गुलाब के फूल,

गूलर के फूल—इन्हे कूटकर चूर्ण बना लें। ३ माशा चूर्ण चावल के धोवन के साथ खावें।

(३) अशोक की छाल २ तोला कूटकर गाय का दूध आधा सेर आधा सेर पानी में मंद अग्नि पर पकावें जब पानी जल जाए तो छानकर पिलावें।

(४) सफेद जीरा, शतावर, आँवला, नीम की छाल,३-३ मासे लेकर पाव भर पानी में पीस-छानकर ठंडाई की तरह पीवें।

(५) छिले हुए ककड़ी के बीज, काकजंघा की जड़, कोध, जटामासी, खस, कमल केशर, नागकेशर, रसोत, अतीस, इंद्र जौ, हाऊ बेर, बेल का गूदा, मोचरस, अनार दाना, मजीठ, मीठा कूठ—इन्हें समान भाग लेकर कूट-छान लें। यह चूर्ण ३ मासे मिश्री मिले धारोष्ण गो-दुग्ध के साथ नित्य लें।

(६) कैथ के पत्ते, खिरनी के पत्ते, बाँस के पत्ते, अशोक के पत्ते-इनका रस दो तोले पीवें।

(७) सुपाड़ी, रसौत, माजूफल, धाय के फूल, निशोथ, गेरू, मुलहठी, नीलोफर- इन्हें पीसकर गिलोय और अड़ूसे के रस में घोटें और मटर की बराबर गोली बना लें। यह गोली ताजे जल के साथ सेवन करें।

(८) अशोक की जड़ का चूर्ण १ ॥ माशा लेकर शहद के साथ चाटें करें।

(९) मोचरस और जड़बेरी के बेरों का कपड़े में छना हुआ चूर्ण २ माशा छह मासे गुड़ में मिलाकर दुध के साथ लें।

(१०) लौकी की बीज छीलकर पिट्टी बनावें और उसे घी में भून लें। मिश्री डालकर इसका हलुआ बना लें और प्रातःकाल खावें।

(११) बथुआ की जड़, खस, खरेंटी की जड़, कमल की जड़, मुलहठी दो तोले लेकर छह छटांक पानी में पकावें जब तीन छटांक रह जाए, तो छानकर मिश्री के साथ पीवें।

(१२) सुगंधवाला, बंशलोचन, रसौत, लोध, गेरू, जीरा, आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, श्योनाक, अनंतमूल, अर्जुन की छाल, पाढ़, नागरमोथा, छाया में सुखाई हुई केले के कच्ची फली, गूलर के कच्चे फल सूखे हुए—इनका चूर्ण ३ मासे लेकर मक्खन और मिश्री के साथ खावें।

वात-व्याधि

जोड़ों का या किसी विशेष अंग का जकड़ जाना या दरद होना

(१) दो छटांक तिली का तेल कढ़ाई में डालकर उसमें दो तोले सोंठ की गाँठें मंद-मंद अग्नि पर भूनें। जब भुन जावें तो तेल को छान लें। दरद या जकड़न के स्थान पर इस तेल की मालिश करें।

(२) तिल का तेल १ सेर, जौकुट काली मिर्च १० तोला, कुचला हुआ लहसुन १२ तोला, अफीम १ तोला—इन सबको मिलाकर एक लोहे के बरतन में बंद कर दें। ढक्कन पर चारों ओर से मिट्टी लेप दें। इस बरतन को चूल्हे के नीचे गढ्ढा खोदकर गाड़ दें। चूल्हे में भोजन बनता रहे। २१ दिन बाद उस बरतन को खोदकर निकाल लें और तेल को छानकर वात व्याधि के स्थान पर लगावें।

३- अंडी के बीज पीसकर गरम कर लें, उसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर लेप करें।

४- सरसों का तेल, बिनौले का तेल, महुआ का तेल, अलसी का तेल, तिल का तेल—इन्हें इकट्ठा करके गुनगुना करें, उसमें थोड़ी अफीम मिलाकर रख लें। दरद की जगह मालिश करें।

५- सोंठ और बाल छड़, ग्वारपाठा के गूदे के साथ पीसकर लेप करें।

६- महुए के तेल में कपूर मिलाकर मालिश करें।

७- चीता, बेलगिरी, रास्ना, पोहकर मूल, सहजन के छाल,

गोखरू, पीपर, सेंधा नमक—इनका चूर्ण २ माशा लेकर शहद के साख खावें।

८-अरंड की जड़, खिरेंटी की जड़, देवदारु, धमासा, रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय, बच, अडूसा, हरड़, नागरमोथा, बिधारा, असगंध, अमलताश का गूदा, धनियाँ, कटेरी—इन दवाओं को जौकुट करके आधा सेर पानी में पकावें, जब तीन छटांक रह जाए तो छानकर पीवें।

(९) लहसुन का सेवन करें।

(१०) भाँगरा के पत्ते, सेंहड़ के पत्ते, अरंड के पत्ते, संभालू के पत्ते, धतूरे के पत्ते, वकायन के पत्ते, आक के पत्ते, कन्नेर के पत्ते—इन्हें बराबर लेकर आधा सेर रस निकालें। उस रस को पाव भर तिली के तेल में मिलाकर मंद-मंद अग्नि पर पकावें, जब रस जल जाए और तेल शेष रहे तो उतारकर छान लें। इस तेल की मालिश करें।

(११) तंबाकू के पत्ते, पीपर, सोंठ, भाँग, काली मिर्च, लौंग, जावित्री, दालचीनी, जायफल, नागकेशर, अजबायन, इन्हें एक-एक तोला जौकुट करे और सवा सेर पानी में पकावें, तब पाँच छटांक रह जाए, तो छानकर तीन छटांक तिली तेल में मिलाकर फिर पकावें जब तेल मात्र शेष रहे तो छानकर लगावें।

(१२) धतूरे के पत्तों का भुरता बनाकर दरद की जगह पर बाँधे।

(१३) मेंथी के बीज १ऽ॥ सेर पानी में एक दिन-रात भीगने दें, फूलने पर उनका छिलका उतारकर पिट्ठी बना लें। बराबर ग्वारपाठे का गूदा मिलाकर गाय के घी में भूनें। खूब भुन जाए, तो नीचे उतारकर सोंठ दो तोला, बिधारा दो तोला, असगंध दो तोला का चूर्ण इसमें मिलावें। फिर मिश्री की चासनी मिलाकर २-२ तोले के लड्डू बना लें, एक लड्डू नित्य खावें।

(१४) बड़ी इलाइची, तेजपात, दालचीनी, शतावर, गँगेरन, पुनर्नवा, असगंध, पीपर, रास्ना, सोंठ, गोखरू, बिधारा, तज, निशोथ—इन्हें गिलोय के रस में घोंटकर मटर बराबर गोली बना लें। बकरी के दूध के साथ दो गोली प्रातःकाल खावें।

(१५) एक तोला काले तिल पीसकर एक तोला पुराने गुड़ में मिलाकर खावें, ऊपर से बकरी का दूध पीवें।

(१६) मजीठ, हरड़, बहेड़ा, आँवला, कुटकी, बच, नीम की छाल, दारु हल्दी, गिलोय-इनका काढ़ा पीवें।

विषों का उपचार

सर्प के काटने पर

(१) सर्प ने जहाँ काटा हो उस स्थान को चाकू से चीरकर खून निकाल दो या आग में जलाकर उस स्थान पर पोटेशियम परमैगनेट कुओं में डालने की लाल दवा भर दो।

(२) खूब घी पिलाओ।

(३) जहाँ काटा हो उससे कुछ ऊपर रस्सी खींचकर बाँध दो।

(४) बेहोशी न आने देनी चाहिए। आँखों पर शीतल जल के छींटे मारते रहो, बाजे आदि से शब्द करते रहो। बातों में लगाए रहो।

(५) काली मिर्च या तंबाकू के पत्ते या कोई और हुलास सुँघाकर छींक लेने से बेहोशी नहीं आती।

(६) नमक मिला गरम जल अधिक मात्रा में पिलाकर वमन कराओ।

(७) जिस सर्प ने काटा हो, उसे मारकर उसका खून काटे स्थान पर लगाना चाहिए।

(८) एनिमा लगाकर दस्त करा दो।

(९) नीम की पत्तियों का रस पिलाओ और नीम की कोंपल खिलाओ।

(१०) काली मिर्च, वनतुलसी के बीज, फिटकरी का फूला, नौसादर, ब्राह्मी, अमलतास का गूदा, गिलोय, नीम की गुठली की गिरी, तज, भुनी हींग—इनको बराबर लेकर चने जैसी गोली बना लें। यह गोली आध-आध घंटे के अंतर से घी और शहद के साथ दें।

(११) काटे हुए स्थान पर तंबाकू के पत्तों को पानी में पीसकर लेप करें।

बिच्छू के काटने पर

(१) काटे हरताल, सेंधा नमक, सोंठ, कबूतर की बीट, अपामार्ग की जड़-इन्हें नीबू के रस में पीसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) काली तुलसी के पत्ते, मोचरस, इंद्रायण की जड़, हुलहुल के पत्ते, नौसादर, जमालघोटा—इन्हें पीसकर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(३) दरिआयी नारियल, समुद्रफल, लहसुन, केशर, करंजा की गिरी, सिरस के बीज, कटेरी की जड़, तंबाकू के पत्ते—इन्हें नीबू के रस में पीसकर लेप करें।

(४) जीरे का चूर्ण दूब के रस के साथ खिलाएँ।

(५) गाय के घी में सोंठ मिलाकर खिलाएँ।

(६) पोटेशियम परमेगनेट और टार्टरिक एसिड मिलाकर खिलावें।

मकड़ी के विष पर

(१) मकड़ी की लार, मल-मूत्र या माँस जिस स्थान पर लग जाता है, वह स्थान लाल हो जाता है। दरद होता है और छोटी-छोटी पीली फुंसियाँ उठ आती हैं। उस स्थान पर आम की खटाई पीसकर लेप करें।

(२) हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ, लालचंदन, नागकेशर, मुर्दासंख, संगजरा, धनियाँ—इनके क्वाथ से उस स्थान को बार-बार धोवें।

(३) चौलाई की जड़ और हल्दी को दूब के रस में पीसकर लेप करें।

बर्र-ततैया, भौंरा या मधुमक्खी के काटे पर

(१) केशर, सोंठ, तगर, कबूतर के बीट, सेंधा नमक—इनको नीबू के रस में पीसकर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) तुलसी के पत्तों का रस मकोय के पत्तों का रस और आक का दूध मिलाकर लेप करें।

(३) तंबाकू के पत्ते और सेंधा नमक मिट्टी के तेल में पीसकर लगावें।

४- नौसादर और चूना पीसकर लगावें।

चूहा, छछूँदर या छिपकली के काटने पर

(१) बकरी की मेंगनी बकरी के मूत्र में पकाकर लेप करें।

(२) काले तिल, जवासा, मजीठ, करंजा की गिरी, हल्दी, सिरस के बीज—इन्हें लहसून के रस में पीसकर लेप करें।

(३) चौकिया सुहागा, जायफल, बायबिडंग, सिरस के बीज इन्हें नीबू के रस में पीसकर लेप करें।

(४) सोंठ, बच, पीपर, जवासा, काली मिर्च, लोंग, कपूर, दालचीनी, इन्हें पीसकर लगावें।

(५) दालचीनी का तेल लगावें।

सियार और कुत्ते के काटने पर

(१) काली मिर्च, सरसों के तेल में पीसकर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) घीग्वार (ग्वारपाठा)के गूदे में साँभर नमक मिलाकर काटे हुए स्थान पर लगावें।

(३) प्याज, अमलताश का गूदा, गंधक, सोंठ, कालीमिर्च, हींग, ओंगा की जड़ पीसकर लेप करें।

(४) आक की कली, धतूर की जड़, पुनर्नवा की जड़—इन्हें शहद के साथ पीसकर लेप करें।

(५) लोंग के क्वाथ से काटे हुए स्थान को धोवें।

(६) फूल प्रियंगु, कूठ, चिरायता, मजीठ, तेजपात, जवाखार, इलायची, सोंठ, पीपर, मुलहठी, ब्राह्मी, बच, अनार की कली–इन्हें अदरक के रस में घोंटकर मटर के बराबर गोली बना लें। एक गोली ताजे जल के साथ नित्य खिलावें।

जहर खा लेने पर

संखिया, बच्छनाग, कुचला, तेलिया आदि विष खा लेने पर गरम पानी में सेंधा नमक मिलाकर खूब पिलावें, जिससे उलटी होकर विष निकल जाए। गुदा–मार्ग में एनिमा लगाकर या साबुन की बत्ती लगाकर दस्त करावें और जितना रोगी पी सके, खूब घी खिलावें। सर्प के काटे और जहर खा लेने पर साधारण इलाज के ऊपर निर्भर न रहकर किसी कुशल अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए।

नशा उतारने के लिए

नशीले मादक पदार्थ अधिक मात्रा में खा लेने पर अधिक नशा चढ़ जाता है और अनेक उपद्रव दिखाई देने लगते हैं। ऐसी दशा में तुरंत ही चिकित्सा करनी चाहिए।

भाँग के नशे पर

(१) अंजीर के फलों का क्वाथ पिलाओ। (२) मक्खन या बादाम का तेल खिलाओ। (३) खोये के पेड़े पानी में घोलकर पिलाओ। (४) नीबू का अचार खिलाओ। (५) दही में सोंठ और सेंधा नमक डालकर खिलाओ। (६) अदरक, नीबू और नमक मिलाकर चटाओ।

अफीम के नशे पर

(१) कपास के पत्तों का रस पिलाओ। (२) भुनी हुई हींग और काला नमक खिलाओ। (३) दूध और घी मिलाकर पिलाओ। (४) बिनौलों की गिरी में फिटकरी मिलाकर खिलाओ। (५) भुनी हुई हींग काला नमक मट्ठे में घोलकर पिलाओ।

(४) गूलकर के कच्चे फल, पुनर्नवा, बालछड़, रास्ना—इन्हें पीसकर लेप करें।

(५) बबूल की छाल और कत्था—इनका काढ़ा बनाकर उसके पानी में कपड़ा भिगोकर बाँधें।

यदि फोड़ा बढ़ गया हो, मुँह छटने लगा हो तो पकाने के लिए यह लेप अच्छे हैं—

१- मूली के बीज, सहजन के बीज, अलसी, तिल, राई, अंडी के बीज, बिनोले, सरसों, सन के बीज—इन्हें पीसकर गुनगुना लेप करें।

(२) हल्दी, आँवा हल्दी, सेंधा नमक, चौकिया सुहागा, मैदा और घी-इनकी पुल्टिस बनाकर बाँधें।

(३) कन्नेर की जड़, कबूतर की बीट, करंज की गिरी, सोंठ, कुटकी, कायफल, मकोय की जड़—इनका लेप करें।

(४) आक की जड़ तंबाकू के पत्ते, लहसुन—इन्हें गुनगुना गरम कर लेप करें।

(५) अमरबेल, तुलसी की जड़, हरड़, हींग, सेंधा नमक, सहजन की छाल—इन्हें मठे में पीसकर लेप करें।

आग के जलने पर

(१) नारियल का तेल जले हुए स्थान पर चुपड़ें।

(२) मक्खन और कपूर मिलाकर लगावें।

(३) सौ बार के धोए हुए घी में जस्ते का फूला (सफेदा) मिलाकर लगावें।

(४) थोड़ी-सी फिटकरी पानी में मिलाकर जख्म को धोवें।

(५) हल्दी, दारु हल्दी, लोध, रसौत, फिटकरी, कत्था, बबूल की छाल—इनका क्वाथ घनी बुनावट के पतले कपड़े में छाल लें। उस पानी में रूई का फाहा भिगोकर जले हुए स्थान पर रखें।

(६) दही को कपड़े में बाँधकर लटका दें, जिससे उसका पानी निकल जाए फिर उसे घी में भूनें और टिकिया बनाकर बाँध दें।

दालचीनी, हरड, नागरमोथा, कपूर, माजूफल,फिटकरी, भुनी इलाइची, अकरकरा, काली मिर्च, सेंधा नमक—इन्हें पीसकर मंजन बना लें । इसे लगाने से दाँत साफ रहते हैं, जड़ें मजबूत होती हैं और मसूढ़ों के रोंग दूर होते हैं ।

(३) अनार की छाल का क्वाथ बनाकर इसके कुल्ले किया करें।

आँखें दुखना

(१) गुलाब जल में थोड़ा फिटकरी का फूला डालकर उसे कई बार आँखों में बूँद-बूँद टपकावें।

(२) हल्दी, आँवा हल्दी, रसौत, फिटकरी, लोध, इंद्र जौ, अफीम, ग्वारपाठे का गूदा-इन्हें पीसकर पलकों पर या आँखों के आस—पास लेप करें।

(३) गरम पानी में जस्ते का फूला डालकर सेकने से दरद बंद होता है।

(४) गैंदे के पत्ते पीसकर उसकी टिकिया आँखों पर बाँधें।

(५) रूई के फाहों पर दूध की मलाई रखकर बाँधे।

(६) हल्दी के पानी में कपड़ा डुबोकर आँखों पर रखें।

(७) पठानी लोध, रसौत, रक्त चंदन, फिटकरी, इंद्र जौ, हल्दी, आँवा हल्दी, कपूर, नीम के कोंपल, ग्वारपाठा, मुलहठी—इन सबको पीसकर एक कपड़े की पोटली में बाँध लें। आँखें बंद करके इस पोटली से पलकों को तर करते रहें। पोटली सूखने लगे तो उस पर पानी छिड़ककर गीली कर लें।

कान का दर्द और बहना

१- कड़ुए तेल को गरम कर उसमें नीम की कोंपल और लहसुन जला लें, इसे छानकर कान में रक्खें।

२- अजबाइन, समुद्रफेन, अदरक, गौ मूत्र, नीबू का रस—इन्हें पानी में मिलाकर किसी लोटे में गरम करें। लोटे के मुँह पर चिलम रखकर उसका नीचे का पेट कान पर रखकर भाप भीतर जाने दें।

रक्त विकार

खून खराबी से उठने वाली फुंसियाँ चकत्ते आदि के लिए—

१- नीम की कोंपल ६ मासे, काली मिर्च २१, आध पाव पानी में घोंटकर ठंढाई की तरह पीवें।

२- चिरायता, मजीठ, खैर, रास्ना, हरड़, बावची, नीम के फूल, मुलहठी, सरफोंका—इनका काढ़ा पीवें।

३- लाल चंदन, नागरमोथा, अडूसा, जवासा, चंदन, गिलोय, हल्दी, कुटकी, नागकेशर, इंद्र जौ, बच हरड़, बहेड़ा, आँवला, धनियाँ धमासा-इनका क्वाथ पीवें।

४- गिलोय, धनियाँ, अमलताश का गूदा, बावची, इलायची, विजयसार, पटोलपत्र, कुड़े की छाल—इनका चूर्ण शहद के साथ खावें।

सिर का दरद

(१) सरदी लगने से दरद होता हो तो तुलसी की चाय पिलावें और केशर, जावित्री, सोंठ, बालछड़—इनको घी में मिलाकर सिर पर लेप करें।

(२) गरमी से होता हो तो मिश्री मिलाकर सोंफ का अर्क या गुलाब का अर्क पिलावें और बादाम, चंदन, कपूर, कलमी शोरा, गेरू, पीसकर सिर पर लेप करें।

दाद और छाजन

(१) आक के फूल, पंवार के बीज, इमली के बीज, हारसिंगार की पत्ती, पलास पापड़ा, कत्था—इन्हें पीसकर चर्ण बना लें। दो रोज के रक्खे हुए खट्टे—मट्ठे में मिलाकर लगावें।

(२) सिरका और नमक मिलाकर लगावें।

(३) मुर्दासंख, गंधक, सुहागा, कवीला, माजूफल, सुहागा, काली मिर्च, राल खुरासानी, अजबाइन—इनका चूर्ण नीबू के रस में घोलकर लगावें।

(४) सज्जी, मूली के बीज, सिंदूर, काली मिर्च, मैनसिल—इन्हें पीसकर दही में मिलाकर लगावें।

गरमी या बरसात के दिनों में चेहरे पर जो फुंसियाँ उठ आती हैं, उनके लिए

(१) उठना आरंभ होते ही इस जगह पर काली मिर्च, सोंठ या लोंग पीसकर लेप कर दें।

(२) चोपचीनी या नीम की छाल घिसकर लगावें।

(३) यदि पूरी उठ आवें तो पकाने के लिए कपूर और घी मिलाकर लगावें।

(४) गंधक, नीलाथोथा, मुर्दासंख, कबीला, सुहागा, कपूर—इन्हें पीसकर घी में मिलाकर रख लें, इस मरहम को लगावें।

(५) नीम के पत्ते और काली मिर्च सरसों के तेल में इतने पकावें कि वे जल कर काले पड़ जावें। छानकर इस तेल को लगावें।

(६) हरड़, बहेड़ा, आँवला, धनियाँ, इंद्र जौ, मुलहठी का जौकुट चूर्ण १ तोला एक गिलास पानी में २४ घंटे भिगोकर मथ लें और मिश्री मिलाकर पिया करें।

खाज

(१) गंधक और तेल मिलाकर लगावें।

(२) गंधक, नीलाथोथा, मुर्दासंख, कबीला, सुहागा—इन्हें तेल में मिलाकर लगावें।

(३) नीम के पत्ते का रस, हल्दी और गौमूत्र—इनका लेप करें।

(४) सोंठ, काली मिर्च, लोंग, पीपर, जायफल, कनेर जड़, आक की जड़, थूहर, सेंहड़–इन्हें तेल में गरम करके जला लें, छान कर इस तेल को लगावें।

(५) सौ बार धुले हुए घी में सिंदूर मिलाकर लगावें।

(६) नीम के पत्ते डालकर खौलाए हुए पानी में खुजली के स्थान को रगड़-रगड़कर धोवें।

घाव भरने के लिए नीचे लिखी दवाएँ अच्छी हैं—

(१) प्याज और हल्दी को सिल पर पीसें, उसमें थोड़ी-सी मैदा मिलाकर घी में भून लें, इसकी टिकिया बाँधे।

(२) चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, लहसुन, करंज, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, नीलाथोथा, मुलहठी, कुटकी, सोंठ, मजीठ—ये दवाऐं लेकर बीस गुनी पानी में पकावें, जब चौथाई रह जाए तो छान लें। इस क्वाथ से आधा गौ घृत लेकर उसमें क्वाथ मिला लें और आग पर पकावें, जब पानी जल जाए तो छान लें। इस घृत को घाव पर लगावें।

(३) शहद, घी और कपूर मिलाकर घाव पर लगावें।

(४) सुहागे का फूला, जस्ते का फूला, फिटकरी का फूला, हींग का फूला, कपूर—इनको सौ बार धोए हुए घी में मिलाकर लगावें।

(५) हल्दी को जलाकर महीन छान लें। घाव को तेल से चुपड़कर उसे बुरक दें, इससे खुरंट पड़ जाता है।

(६) मिट्टी के तेल में रूई का फाहा भिगोकर बाँध दें।

चाकू आदि से कट जाने पर खून निकल रहा हो तो

(१) उस स्थान पर पेशाब कर दें।

(२) पानी में भिगोकर कपड़ा बाँध दें।

(३) चूना बुरक दें या उपले की राख लगा दें।

(४) रूई या पुराना कागज या बाल जलाकर उसकी राख कटे हुए स्थान पर चिपका दें।

जब फोड़ा पक जाए तो उसे दबाकर पीव निकाल दें, भीतर भरे हुए मवाद को बाहर निकालने के लिए उपाय करें—

(१) मेंथी के बीज और ग्वारपाठा महीन पीसकर सरसों के तेल में भून लें, उसकी टिकिया बाँधें।

(२) अंडी के पत्तों को पीसकर अंडी के तेल में तल लें, उसकी टिकिया बाँधे।

(३) पान के ऊपर घी और सिंदूर लगाकर बाँधे।

(४) नीम के रस में रूई का फाहा भिगोकर सरसों के तेल में गरम करें जब पानी सूखकर चटकना बंद हो जाए तो वह फाहा बाँधे।

(५) तिल और तुलसी के पत्ते महीन पीसकर गरम कर लें। इनकी टिकिया बाँधें।

घाव को नित्य धोना और साफ करना चाहिए, धोने के लिए नीचे लिखी रीति से पानी तैयार करना अच्छा है—

(१) आधा सेर पानी में ६ माशे फिटकरी घोल लें।

(२) लौंग ६ माशे आधा सेर पानी में औटावें, जब छह छटाँक रह जावे तो छान लें।

(३) सेर भर पानी में आधा पाव नीम की कोंपल को औटावें जब छह छटाँक रह जावे तब छान लें।

(४) हल्दी, हरड़, नीम की छाल, निशोथ, दारु हल्दी—इन्हें जौकुट करके बीस गुने पानी में पकावें, जब तीन-चौथाई रह जावे तब छान लें।

(५) आधा सेर पानी में एक तोले नीबू का रस डाल दें।

(६) आधा सेर पानी में २ माशा कपूर और दो मासे सेंधा नमक मिला दो।

फोड़े की चिकित्सा यदि फोड़ा उठा ही हो तो उसे बैठाने के लिए ये लेप अच्छे हैं—

(१) हल्दी और चावल पानी में पीसकर लेप करें।

(२) दूब की जड़, खस, मुलहठी, चंदन,सुगंधवाला, गुलाब के फूल, पद्माख—इन्हें पीसकर लेप करें।

(३) बड़ की जटाएँ, नीम की छाल, गैंदा की पत्ती, तुलसी के बीज पीसकर लेप करें।

(७) कच्चे आलू पीसकर लेप करें।

(८) शहद और घी मिलाकर लगावें।

(९) एक सेर पानी में एक छटांक चूना मिला दें, जब चूना नीचे बैठ जाए, तो उसमें से पानी नितार लें, यह पानी और नारियल का तेल बराबर मात्रा में फेंटकर लगावें।

(१०) नीम की कोंपल सरसों के तेल में पकावें, जब पत्तियाँ जल जाएँ, तो उन्हें छानकर अलग निकाल दें, इस तेल को लगावें।

सुखी उबकाई—बमन

(१) दूध को फाड़कर उसे छान लें, इस पानी को जरा-सी मिश्री डालकर थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

(२) बरफ चूसने से उबकाई शांत होती है।

(३) आध पाव पानी में एक तोला शहद घोलकर पिलावें।

(४) चंदन चूरा, बालछड़, कचूर, आँवला—इनका काढ़ा बनाकर मिश्री मिलाकर पीवें।

(५) लोहे की कील आग में खूब लाल करके पानी में बुझा लें, इस पानी को पीने से उबकाई बंद होती है।

(६) मीठे अनार का रस मिश्री मिलाकर पीवें।

(७) फालसे का शरबत बनाकर पीवें।

(८) धनियाँ, पुदीना, सफीद जीरा, अनारदाना, पित्त पापड़ा, अदरख, सोंफ, आँवला—इन सबको समान भाग लेकर खरल कर लें फिर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को चूसना चाहिए।

(९) पीपल पेड़ की छाल जलाकर राख कर लें, उसमें १ तोला राख आध सेर पानी में घोल दें, जब राख नीचे बैठ जाए तो पानी को नितारकर पिलावें।

(१०) बड़ की जटा ३ माशे २॥ तोला पानी में पीसकर पिलावें।

(११) गुनगुने घी में बतासे डुबा-डुबाकर खावें।

(१२) मुलहठी, काकड़सिंगी और नागरमोथा का चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी के साथ चाटें।

हैजा (कै-दस्त)

(१) सफेद जीरा, सोंठ, पीपर, लाल मिर्च, भुनी हींग, धनियाँ, बच, अजमोद, पाढ़, सेंधा नमक—इन्हें बराबर नीबू के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बना लें। गुलाब जल के साथ आध-आध घंटे पर यह गोलियाँ दें।

(२) कासनी, इलाइची के बीज, धनियाँ, सोंफ, गुलाब के फूल-इनका क्वाथ मिश्री मिलाकर दें।

(३) लोंग का चूर्ण चालीस गुने पानी में औटावें, जब तीन-चौथाई रह जाए, तो उसे प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा करके चम्मच से दें।

(४) आक की जड़ की छाल १ तोला, लाल मिर्च १ तोला, भुनी हींग ३ माशे—इन्हें अदरक के रस में खरल करके मूँग के बराबर गोली बना लें। यह गोली पोदीना के रस के साथ दें।

(५) प्याज का रस, पोदीना का रस, मूली का रस, अदरक का रस, एक-एक तोले मिलाकर पिलावें।

(६) सोंठ, भूनी हींग, काली मिर्च, कपूर, अफीम, केशर—इन्हें बराबर लेकर काली मिर्च जैसी गोली बना लें। पानी के साथ दें।

(७) पीपर, जीरा, हींग, नागरमोथा, चित्रक, करंज की गिरी, कुड़े की छाल, सोंठ, जायफल—इनका चूर्ण मूली के रस और प्याज के रस के साथ चटावें।

(८) गौ मूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलावें।

कै-उल्टी (पानी, पित्त या अन्न की)

(१) हरी गिलोय एक तोला कुचलकर आधा सेर पानी में पकावें, जब आधा पाव रह जावे, तो शहद के साथ मिलाकर पिलावें।

(२) आम के पत्ते, जामुन के पत्ते, बेलगिरी, बेर के पत्ते, आँवले,

छोटी पीपल छह-छह माशे लेकर आधा सेर पानी में पकावें, जब आधा पाव रह जावें तो छान कर पीवें।

(३) गेहूँ की रोटी को जलाकर उसकी राख पानी में घोल दें, जब पानी नितर जाए, तो उसे ऊपर से उतारकर पिलावें।

(४) दूब की जड़ का रस निकालकर उसमें छोटी इलाइची का चूर्ण २ मासे मिलाकर चटावें।

(५) गौ के ताजे दूध में मुलहठी और लाल चंदन मिलाकर पिलावें।

(६) बेर की गुठली का गूदा, फूल प्रियंगु, इलाइची, लौंग, नागकेशर, सफेद चंदन, पीपल--इनको बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लें। २ मासे लेकर शहद के साथ चटावें।

(७) मौलसिरी की छाल, आम की गुठली, बेलगिरी, अशोक की छाल, बबूल की छाल, कत्था- यह सब ६-६ माशे लेकर तीन पाव पानी में पकावें, जब चौथाई रह जाए तो थोड़ा-थोड़ा करके चम्मच से पिलावें।

(८) गेरू आग में खूब लाल करके उसे पानी में बुझावें और उस पानी को नितार कर पिलावें।

(९) नीबू बीच से काटकर उसमें सेंधा नमक, काली मिर्च पीसकर गोद-गोदकर भर दें, फिर उसे आग पर गरम करके चुसावें।

(१०) छोटी इलाइची, भुनी हींग, जीरा, पुदीना, धनियाँ, काला नमक, सेंधा नमक, पीपल, अदरक, सुहागे का फूला--इनकी चटनी बनाकर चटावें।

(११) सिरका और काला नमक मिलाकर चटावें।

(१२) छोटी पीपल को नीबू के रस में घोंटें, जब रस सूख जाय तो फिर डाल लें, इस प्रकार चार भावना देकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें, इन गोलियों को चूसने से बमन बंद होती है।

(१३) केले के भीतरी गूदे का रस निकालकर उसमें छोड़ी चीनी मिलाकर पिलावें।

(१४) करंज के बीज, इमली के बीज, नीम के बीज, कमलगट्टा- इन सबको भूनकर भीतर की गिरी निकाल लें। बराबर मात्रा में लेकर आँवले के रस में घोंट डाले और मूँग के बराबर गोली बना लें। दो गोली गरम पानी के साथ दें।

१५- हींग पानी में घोलकर पेट पर उसकी हलकी-हलकी मालिश करें।

१६- पिपरमेंट, सत अजबाइन और कपूर—ये तीनों चीजें लेकर एक शीशी में बंद करके कड़ी डाट लगाकर रख दें, कुछ देर में तीनों का पानी-सा हो जाएगा, इसमें से १०-१५ बूँद दो तोला पानी में डालकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद पिलाते रहें।

१७- आलू बुखारा मुँह में डालकर चूसते रहें।

अनिद्रा

(१) काकजंघा की जड़ पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से निद्रा आती है।

(२) छह मासे पुराने गुड़ में तीन मासे पीपरामूल मिलाकर शाम को खाने से रात को अच्छी नींद आती है।

(३) प्याज का रस एक तोला ओटे हुए दूध में मिलाकर रात को पीवें।

(४) पैर के तलवों पर तिल का तेल मलें।

(५) बकरी के दूध में थोड़ी-सी भांग पीसकर मिला लें और पाँव के तलवों तथा हाथ की हथेलियों पर मालिस करावें।

(६) गाय का धारोष्ण दूध कपाल पर धीरे-धीरे मलने से नींद आती है।

(७) कान में सरसों का लेत डालने से नींद आती है।

मंदाग्नि-अपच

(१) सोंठ, काली मिर्च, पीपर, सेंधा नमक, सफेद जीरा,

काला जीरा, अजमोद, हींग का फूला बराबर लेकर कूट-छान लें। भोजन में पहले ग्रास में घी के साथ इसे खावें।

(२) सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, तालीस पत्र, दालचीनी, जीरा, सोंठ, अमलवेत, अनारदाना, पाँचों नमक बराबर लेकर कूट-छान लें। भोजन के बाद दो माशा लें।

(३) चीते की छाल, पीपर, सोंठ, अजमोद, जीरा, जवाखार, इलाइची, धनियाँ, तेजपात, लोंग, काली मिर्च, पाँचों नमक बराबर लेकर कूट-छान लें। सबेरे मठा के साथ दो माशा लें।

(४) लाल मिर्चों को अदरक के रस व नीबू के रस में खरल करें फिर काली मिर्च की बराबर गोलियाँ बना लें। पान रखकर यह गोली खावें।

(५) सोंफ, सोंठ और मिश्री बराबर मिलाकर रख लें। ताजे पानी के साथ लें।

(६) जवाखरा और सोंठ का चूर्ण गर्म पानी के साथ फाँकें।

(७) सुखा पुदीना, इलाइची, सोंठ, सोंफ, गुलाब के फूल, धनियाँ, सफेद जीरा, अनारदाना, आलू बुखारा, हरड़— इन्हें पीसकर बराबर मिश्री मिलाकर रख लें। ३ मासे ठंढे जल में लें।

(८) दस्त कराने की जरूरत हो तो कालादाना ६ मासे मिश्री ६ मासे मिलाकर गर्म पानी के साथ लें।

(९) सनाय, अमलताश, का गूदा, बड़ी हरड़ का बक्कल, अंजीर, सोंफ, मुलहठी—इन्हें सब मिलाकर दो तोला लें, आध सेर पानी में पकावें, तीन छटांक रह जावे तो छानकर पीवें इससे तीन बार दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

(१०) जुलाफा हरड़ का चूर्ण लेने से भी दस्त हो जाते हैं।

(११) सिरका, सोंठ और काला नमक, भुना सुहागा और हींग का फूला मिलाकर देने से पेट दरद बंद होता है।

(१२) चूहे की मेंगनी, सोंफ और साँभर नमक पानी में पीसकर पेट पर लेप करने से दरद बंद होता है।

पेट में कीड़े पड़ जाना

(१) एनिमा द्वारा साबुन और नीबू का रस मिलाकर पानी गुदा-मार्ग से पेट में चढ़ावें। इससे कीड़े मरकर दस्त के साथ निकल जाते हैं।

(२) वायबिडंग का चूर्ण, वायबिडंग के क्वाथ के साथ सेवन करें।

(३) सोंठ, काली मिर्च, पीपल वायबिडंग, भुनी हींग, अजमोद, पीपरामूल, सज्जी-इनका क्वाथ बनाकर पीवें।

(४) ढाक के बीजों को पीसकर नीम के रस के साथ खरल करके चने जैसी गोली बना लें, शहद के साथ लें।

(५) जायफल एक माशा शहद के साथ चाटें।

(६) पीपल का चूर्ण नीबू के रस में साथ चाटें।

(७) निशोथ, अजबाइन, नीम की कोंपल, नीबू की जड़, हींग कबीला—इन्हें गौ मूत्र में घोंटकर चने जैसी गोली बना लें। मठे के साथ लें।

(८) शुद्ध अंडी का तेल (कैस्टर ऑयल) पिलाकर दस्त करावें।

(९) नौसादर दो मासे पीसकर गरम पानी के साथ लें।

(१०) नीम की कोंपल, पुदीना, करेले के पत्ते, लहसुन—इन चारों को मिलाकर रस निकालें। इस रस को दो तोले नित्य पीवें।

(११) धतूरे के पत्ते, अरंड के पत्ते, मेंहदी के पत्ते, प्याज—इन्हें पीसकर गुदा पर लेप करें।

दस्त

(१) अतीस, इंद्र जौ, बेलगिरी, धनियाँ, नागरमोथा, सुंगधवाला—इनको २-२ तोला लेकर १॥ पानी में पकावें, चौथाई रह जाने पर छानकर पीवें।

(२) अजबाइन, सोंठ, पटोलपत्र, कूट, बच, बेलगिरी—इनका चूर्ण १॥ माशा लेकर शीतल जल के साथ लें।

(३) धाय के फूल, मजीठ, लोध, मोचरस, अनार का बक्कल—इन्हें समान भाग लेकर चूर्ण बना लें। दो माशा की मात्रा चावल के धोवन के साथ लें।

(४) आम की गुठली की गिरी, फूल प्रियंगु, बेलगिरी, जामुन की गुठली की गिरी, सूखे सिघाड़े, लोध, धाय के फूल, सोनपाठा—इन्हें बराबर लेकर कूट-पीस लें। दो मासे चूर्ण उबले हुए चावल के मांड़ के साथ लें।

(५) लाजवंती के बीज १ तोला, मोचरस १ तोला, ढाक का गोंद १ तोला, अफीम १ माशा—इन्हें पीसकर उड़द के बराबर गोलियाँ बना लें। दो-दो गोली ताजे जल के साथ लें।

(६) जायफल १ तोला, छुहारे का बक्कल १ तोला, बेलगिरी १ तोला, अफीम १ माशा—इन्हें पान के रस में घोंटकर मूँग जैसी गोलियाँ बना लें। दो-दो गोली गुनगुने पानी के साथ लें।

(७) भांग, जायफल, इंद्र जौ, बबूल का गोंद, मौलश्री की छाल, अतीस, कत्था, लोध, अनार के फूल, सोंफ, सोंठ, मोचरस—इनका चूर्ण दो मासे लेकर नमक और जीरा पड़े हुए मट्ठे के साथ लें।

(८) तालमखाने का चूर्ण ३ माशे लेकर पानी निचोड़े हुए दही के साथ खावें। दही में भुना जीरा, काला नमक तथा सोंठ मिला लें।

(९) पीपर, पीपरामूल, धनियाँ, सफेद जीरा, सोंठ, इलाइची, नागरकेशर, दालचीनी, चित्रक, चव्य—इन्हें बराबर लेकर कूट- छान लें, फिर अनारदाने के रस में खरल करके चंने के बराबर गोली बना लें। बबूल की छाल के क्वाथ के साथ ये गोली लें।

(१०) कुड़े की छाल, जावित्री, सोंठ, जायफल, मातंगी, कैथ

के बीज एक-एक तोला, भुनी हुई हींग ३ माशे, काला नमक ३ माशे—इनका चूर्ण सेवन करें।

(११) छुहारे की गुठली और रसौत घिसकर चाटें।

(१२) ईसबगोल की भुसी १॥ माशा पानी के घूँट के साथ उतार लें।

खूनी दस्त

(१) आँवले के पत्ते, जामुन का पत्ते, बबूल के पत्ते, आम के पत्ते, अशोक के पत्ते बराबर लेकर इनका रस २ तोला निकालें, थोड़ा बकरी का दूध मिलाकर पीवें।

(२) मठा और मिश्री मिलाकर पीवें।

(३) कतीरा, गेरू, कोंच के बीज, कत्था, अशोक की छाल, मरोड़ फली, अनारदाना, धनियाँ, इलाइची, बंशलोचन, नागकेशर, मस्तैगी-इन्हें पुदीना के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बना लें। इन्हें आम की छाल के क्वाथ के साथ लें।

(४) गोरखमुंडी, सोंफ और मिश्री—तीनों चीजें बराबर मिलाकर रख लें। इसमें से ३ मासे लेकर शीतल जल के साथ लें।

(५) मरोड़फली और ईसबगोल ६-६ माशे लेकर एक पाव पानी में पीस-छानकर पीवें।

बवासीर

(१) नीम की गुठली का गूदा, काले तिल, नागकेशर, चीता, झाऊ बेर—इन्हें कूटकर अदरक के रस में खरल करके जंगली बेर के बराबर गोली बना लें। एक गोली नित्य मठे के साथ सेवन करें।

(२) लाल चंदन, सोंठ, धमासा, चिरायता, दारु हल्दी, कमलगट्टा, नागकेशर, खरैंटी—इनका चूर्ण दही के साथ सेवन करें।

(३) जमीकन्द को भूनकर दही के साथ खावें।

(४) काले तिल २ तोला लेकर मिश्री के साथ प्रात:काल चटावें।

(५) मूली के बीज, चाकसू, रसौत, सफेद कत्था, कमल

केशर, नागकेशर, तंतरीक समान भाग लेकर चूर्ण बनावें, २ माशा चूर्ण शहद के साथ लें।

(६) बिदारी कंद और पीपर समान भाग लेकर चूर्ण बना लें, इसमें से २ माशा लेकर बकरी के दूध के साथ सेवन करें।

(७) जले हुए गेहूँ ६ मासे पीसकर २ तोला मक्खन के साथ खावें।

(८) जमीकंद के टुकड़े करके छाया में सुखा लें, निबोली का गूदा समान भाग लेकर कूट-छान लें, इस चूर्ण को ३ माशे लेकर गौ के ताजी मठे या शीतल जल के साथ लें।

(९) गूलर के फल और गैंदे की पत्ती ६-६ माशे काली मिर्च एक मासे एक पाव पानी में पीसकर मिश्री मिलाकर पीवें।

(१०) जायफल, पीपर, धनियाँ, दालचीनी, तेजपात, चीते की छाल, तालीसपत्र, नागरमोथा, पीपलामूल, कलमी शोरा इन सबको कूट-छानकर मूली के रस में घोंटकर मटर बराबर गोली बना लें। अदरक के रस में एक गोली नित्य लें।

(११) बबूल की पत्ती कंघी की पत्ती, छह छह माशा काला जीरा और काली मिर्च एक-एक माशा इन्हें आध पाव पानी में पीसकर मिश्री मिलाकर पीवें।

(१२) करंज की गिरी, हरसिंगार के बीजों की गिरी, बबूल के बीजों की गिरी, जामुन के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी, इमली के बीजों की गिरी, काली मिर्च समान भाग लेकर मटर बराबर गोली बनावें। मठे के साथ सेवन करें।

बवासीर के मस्से पर लेप

(१) सेंहड़ का दूध और हल्दी का चूर्ण मिलाकर मस्सों पर जरा -सा लगा देना चाहिए।

(२) कडुई तोरई की जड़ का मस्सों पर लेप करना चाहिए।

(३) कन्नेर का पत्ते, नीम के पत्ते, आक के पत्ते और सहजन के पत्ते-इन्हें पीसकर मस्सों पर लेप करें।

(४) शंख, सज्जी, नीलाथोथा, सेंधा नमक, करंज की गिरी, पीपर–इन्हें नीबू के रस में खरल करके बड़ी–बड़ी गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को घिसकर मस्से पर लगावें।

(५) भांग, गूगल, भुनी फिटकरी, मुलतानी मिट्टी–इन्हें थूहर के दूध मे खरल करके बड़ी–बड़ी गोलियाँ बना लें, इन गोलियों को घिसकर मस्से पर लगावें।

(६) सुहागे का फूला, फिटकरी का फूला, हींग का फूला, हल्दी, कपूर—इनको सौ बार धोए घी मिलाकर रख लें। मरहम की तरह मस्सों पर लगावें।

(७) आक के पत्ते, तंबाकू के पत्ते, चरिमिटी के पत्ते-इन्हें भीगे कपड़े में लपेटकर भूभल में भुरता बना लें, फिर उन्हें निचोड़ कर जो रस निकले उसे मस्सों पर लगावें।

(८) कलमी शोरा और रसौत मूली के रस में पीसकर मस्सों पर लगावें।

पेट में उठने वाला वायु गोला

(१) सोंठ, जीरा, हरड़, काला नमक, बच, हींग, चव्य, चित्रक, पीपरामूल, अम्लवेत, आनारदाना, जवाखार, सुहागे का फूला—इन्हें अदरक के रस में घोंटकर मटर के गोली बना लें। यह गोली गरम पानी से लें।

(२) सज्जीखार ३ माशे, पुराना गुड़ ६ माशे मिलाकर सेवन करें।

(३) जब दरद उठ रहा हो तब ऐनिमा देकर दस्त करा दें, दरद बंद हो जाता है।

(४)– अजबाइन ३ माशा, काला नमक एक माशा पीसकर मठे के साथ लें।

(५) चीता, चव्य, पीपर, पीपरामूल, भारंगी, जवाखार—इनका काढ़ा बनाकर पीवें।

(६) बाजरा आधी छटांक लेकर दस छटांक पानी में पकावें जब तीन छटांक रह जावे तब छानकर पीवें।

(७) सरसों, राई, अंडी के बीज, तिल, अलसी, बिनौले की गिरी, महुआ की गिरी, नारियल की गिरी, चिरोंजी, कमलगट्टे की गिरी-इन्हें पीसकर गुनगुना कर लें और वायु गोले के स्थान पर लेप करें।

८- अमर बेल और नागरमोथा पीसकर गाय के मठे में पका लें। वायु गोला के स्थान पर लेप करें।

मोटापा

(१) जिसके शरीर में चरबी बढ़ गई हो, उन्हें व्यायाम की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। घी,दूध तथा फलों की मात्रा भोजन से कम कर देनी चाहिए। भोजन में जौ, चना, मटर आदि रुक्ष पदार्थों की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। इस रोग में उपवास करना, भूखे रहना, कम खाना बहुत अच्छा है।

(२) सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आँवला, चित्रक, जीरा, हींग का फूला समान भाग पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें से दो माशा चूर्ण लेकर ताजे पानी के साथ नित्य प्रातःकाल सेवन करें।

(३) शहद में लगाकर मूली खावें।

(४) सोंठ, सोंफ, चव्य, वायबिडंग, काला नमक—इनका चूर्ण २ माशा गाय के मठे के साथ नित्य खावें।

(५) बेर की पत्ती, अनार की कली, गिलोय, अरंड की जड़, ढाक के फूल-इन पाँचों को एक-एक मासे लेकर आधा पाव पानी में पीस लें और मिश्री मिलाकर पीवें।

(६) नागरमोथा, कूठ, दालचीनी, लोंग, देवदारु, वायबिडंग, सोंठ, मुलहठी—इनको समान भाग लेकर गिलोय के रस में मटर बराबर गोली बना लें, चावल के माँड़ के साथ एक गोली नित्य खावें।

बच्चों के रोगों की चिकित्सा

खांसी—

(१) अतीस, काकड़सिंगी, पीपल, नागरमोथा—इन चारों को समान भाग लेकर पीकर रख लें। यह चूर्ण थोड़ा-सा लेकर शहद के साथ चटाने से बच्चों के दस्त, ज्वर, दूध पटकाना और खांसी को लाभ होता है।

(२) धनियाँ, इंद्र जौ, मिश्री जरा सी लेकर चावल के धोवन के साथ पीस लें। इस पानी को थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

(३) अडूसे के रस में मुनका पीसकर चटावें।

(४) अदरक, पान का रस और शहद मिलाकर चटावें।

(५) देवदारु की लकड़ी दूध में घिसकर पिलावें।

ज्वर—

(१) धाय के फूल, सुगंधवाला, लोध, नागरमोथा—इनका चूर्ण माता के दूध या शहद के साथ चटावें।

(२) पीपल का चूर्ण शहद के साथ चटावें।

(३) गिलोय का रस शहद में मिलाकर चटावें।

(४) माता के दूध में बंशलोचन मिलाकर पिलावें।

(५) नागरमोथा का क्वाथ शहद में मिलाकर पिलावें।

दस्त—

(१) बेलगिरी पानी में घिसकर चटावें।

(२) छुहारे की गुठली घिसकर चटावें।

(३) अतीस का चूर्ण चावल के माँड़ के साथ पिलावें।

(४) नेत्रवाला, धाय के फूल, मजीठ, गजपीपल—इनका क्वाथ पिलावें।

(५) कमल केशर, मोचरस, छुहारे का बक्कल, लाजबंती के बीज, अजमोद, वायबिडंग, जीरा, भुनी हींग—इन्हें पीसकर मूँग के बराबर गोली बना लें, चावल के धोवन के साथ यह गोली दें।

(६) अधिक दस्त होते हों तो अफीम एक सरसों के दाने के बराबर लेकर माता के दूध के साथ पिला दें।

दूध का उल्टी करना—

(१) हींग को पानी में घोलकर पेट पर लेप करें।

(२) छोटी इलाइची और दालचीनी का चूर्ण शहद के साथ दें।

(३) पीपल और मुलहठी का चूर्ण नीबू के रस एवं शहद के साथ चटावें।

(४) सोंठ, सोंफ, बड़ी इलायची, तेजपात, जीरा, भुनी हींग—इन्हें पीसकर मिश्री की चासनी के साथ चटावें।

(५) सोना गेरू पानी में घोलकर जरा-जरा सा पिलावें।

पेट फूलना—

(१) कालानमक और हींग का फूला घिसकर चटावें।

(२) सोंठ, भारंगी, पीपल और सेंधा नमक मिलाकर दें।

(३) सिरका और नमक मिलाकर दें।

(४) गुदा मार्ग में नहाने के साबुन की बत्ती-सी बना कर रख दें। थोड़ी देर में दस्त होकर पेट ठीक हो जाएगा।

(५) सनाय, बड़ी हरड़ का बक्कल, अमलतास का गूदा पानी में पीसकर मिश्री मिलाकर दें।

खून खराबी
(शरीर पर चकत्ते, खुजली या फुंसियाँ उठना)

१- हल्दी, नीम की छाल, सारिवा, मजीठ, मुलहठी—इनका क्वाथ शहद के साथ पिलावें।

२- हरड़, खस, सफेद चंदन, इंद्र जौ, नागरमोथा, सफेद चंदन, लाल कमल-इन्हें पीसकर शरीर पर लेप करें।

३- हल्दी, सरसों, मुलहठी, इन्द्र जौ, नागरमोथा, सफेद चंदन, लाल कमल—इन्हें पीसकर शरीर पर लेप करें।

४- मठे में वायबिडंग और थोड़ा नमक मिलाकर शरीर पर लगावें।

५- नीम की कोंपल और तिल पीसकर शरीर पर लगावें।

मुँह के छाले—

(१) आम की गुठली, रसौत, सोना गेरू, पपरिया कत्था—इन्हें पीसकर शहद में मिलाकर मुँह में लगावें।

(२) मुलहठी, लोध, बंशलोचन, इलाइची—इनका क्वाथ बनाकर मुँह में डालें।

(३) पीपल के पत्तों का रस, पान का रस बराबर मिलाकर मुँह में भीतर पोत दें।

(४) कुलंजन, अदरक, हल्दी, खस, देवदारु—इनके क्वाथ से कुल्ला करवायें।

(५) इलाइची, कत्था, चंदन, मुलहठी, धनियाँ, मिश्री—इन्हें पान के रस में पीसकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को मुँह में रखकर चुसावें।

ॐ

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा